साधनाओं के मूल रूप से तीन स्वरूप हैं–1. वीर भाव साधना, 2. भक्तिभाव साधना, 3. प्रेमभाव साधना, देवताओं के पूजन में सामान्य तौर पर साधक भक्तिभाव का प्रयोग करता है, निवेदन करता है।

वीरभाव साधना में साधक अपने अधिकारों की पूर्ति हेतु आह्वान करता है, वहीं प्रेम भाव में अपने आपको उस देवी शक्ति से जोड़ देता है, अपने सम भाव पर स्थापित कर लेता है, यह साधना सबसे सरल और सुन्दरतम स्वरूप वाली साधना है।

☆ आनन्द भैरवी ☆

आदिशक्ति देवी से शिव का प्रादुर्भाव हुआ और शिव तथा शक्ति के संजोग से कुछ विशेष शक्तियाँ उत्पन्न हुई, जिनमें शिव भाव भी था, शक्ति भाव भी था और इन शक्तियों की रचना एक महान मिलन के कारण हुई थी, जिसका आधार आनन्दतथा दिव्य भाव था, इसीलिए इन विशिष्ट शक्तियों में रूप और सौन्दर्य के तीव्रतम स्वरूप प्रगट हुए और इनके गुणों में, इनके प्रभाव में जहां शिव भाव जाग्रत रहा, वहीं शक्ति भाव तो साक्षात् रूप से था ही।

'आनन्द भैरवी' का स्वरूप अल्हड़ नदी की भांति है, क्योंकि इसमें शिवत्व है, निश्चिन्तता है, प्रसन्नता का मीठा जल तत्व है, दूसरी ओर इसमें देवी के सौन्दर्य का प्रत्येक अंश पूर्ण रूप से विद्यमान है, शारीरिक दृष्टि से यह सर्वांग-सम्पूर्ण है, **'रुद्रयामल तन्त्र'** में लिखा है, कि कलियुग में

साधक तो अपने स्वार्थ स्वरूप, अपनी इच्छा स्वरूप, अपनी सांसारिक कामनाओं की पूर्ति हेतु साधना करता है, उसे शिव तक आने की क्या आवश्यकता है, उसे तो मेरे स्वरूप '**आनन्द भैरवी**' में ही वे सभी सांसारिक सुख प्राप्त हो जाते हैं और वही उनके लिए सरलतम रूप साध्य है।

आदिशक्ति देवी की साधना करते समय साधक एक भक्ति भाव, समर्पण भाव, निवेदन भाव, दिव्य भाव रखता है, वहीं आनन्द भैरवी की साधना प्रेम भाव साधना है, जिसमें उसे अपने प्रिया, अपनी मित्र रूप में सिद्ध किया जा सकता है, जब प्रिया रूप में कोई किसी को अपनाता है, तो वह उससे भेद नहीं रखता, अपनी सारी कमियों को खोल कर रख देता है, अपनी इच्छाओं के द्वार खोल देता है और आनन्द भैरवी सहयोगी बनती है, हर क्षण उन सभी क्रियाओं को पूर्ण रूप से सम्पन्न कराने में, क्योंकि इसमें सिद्धि प्राप्त साधक प्रियतम बन जाता है और प्रिया का तो कर्त्तव्य है, कि उसका प्रियतम हर दृष्टि से पूर्ण हो, उसके जीवन में आनन्द ही आनन्द हो, वह श्रेष्ठतम बन सके।

'**परमानन्द तन्त्र**' में आनन्द भैरवी के स्वरूप, व्याख्या एवं विधान के सम्बन्ध में विस्तार से लिखा गया है, आनन्द भैरवी शिव का अर्द्धनारीश्वर स्वरूप है; अत: जो साधक इसे सिद्ध कर लेता है, उसके साथ आनन्द भैरवी पूर्ण रूप से जुड़ जाती है।

खुले लहलहाते लम्बे केश, गोल चक्र समान, स्वर्ण के रंग समान दीप्ति देता हुआ चेहरा, जिनमें अलसाये से आनन्द तृप्ति भाव लिये बड़े नेत्र, थोड़े मोटे अधखुले होंठ, शरीर में बल, ठोस संरचना, केवल एक अधोवस्त्र धारण किये हुए, आनन्द भैरवी का स्वरूप कैलाश कन्या का स्वरूप है, जिसमें शुद्धता, निश्छलता और प्रेम रस से सराबोर व्यक्तित्व है।

आनन्द भैरवी साधना

- जब साधक शक्ति को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है, तभी तो उसके जीवन में आनन्द का सागर लहरा सकता है और आनन्द भैरवी की साधना शक्ति और आनन्द दोनों का संयुक्त स्वरूप है।
- पीड़ा चाहे मन की हो अथवा तन की; पीड़ा का प्रभाव पूरे व्यक्तित्व पर, उन्नति पर, कार्यों पर पड़ता है, आनन्द भैरवी साधना जिसे प्रिया रूप में सिद्ध हो जाती है, उस साधक की सभी पीड़ाओं का पूर्ण रूप से नाश करती है।
- आर्थिक दृष्टि से दु:खी व्यक्ति अपने जीवन में आनन्द के उपभोग की केवल कल्पना ही कर सकता है, लेकिन आनन्द भैरवी साधना से उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से विशेष स्थिति प्राप्त होती है, जिससे वह जीवन के हर रूप का आनन्द ले सके।
- जो ज्यादा जानकार हैं, जो अपने को महा पंडित समझते हैं, तर्क के स्थान पर कुतर्क करते हैं, उन्हें यह साधना सिद्ध नहीं हो सकती, क्योंकि आनन्द भैरवी तो सरल निश्छल, समर्पित, व्यग्र, इच्छावान साधक को ही स्वीकार करती है।
- आनन्द भैरवी साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाने के पश्चात् किसी भी संकट के समय, किसी भी कार्य के समय साधक ध्यान करता है, तो तत्काल साधक को उस समस्या का समाधान प्रदान करती है।
- आनन्द भैरवी साधना से तीन शक्तियाँ कर्म शक्ति, इच्छा शक्ति और ज्ञान शक्ति पूर्ण रूप से जाग्रत हो जाती है, जिससे साधक अपने जीवन में, प्रत्येक कार्य सरलता से सम्पन्न कर सकता है।
- आनन्द भैरवी साधक के जीवन में भय शब्द ही हटा देती है, जिससे साधक को राजकीय बाधा-भयं, शत्रुभय, विश्वासघात भय की चिन्ता ही नहीं रहती, शत्रु तो सहयोगी अथवा मित्र बन जाते हैं।

ग्रन्थों में इसे तांत्रिक साधना का स्वरूप दिया गया है, इसका तात्पर्य केवल इतना ही है, कि जीवन तंत्र में आनन्द प्राप्त करने हेतु की गई साधना है, प्राचीन समय में मोक्ष प्राप्ति की साधनाओं पर विशेष बल दिया जाता था, उस समय युग अलग था, विचारधारा अलग थी, वर्तमान युग में जीवन में सुख प्राप्ति का इच्छुक साधक अपने लिए शुरू से ही मोक्ष

साधना की ओर नहीं बढ़ सकता, उसके लिए जीवन का प्रत्येक सुख आवश्यक है, आज प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को पूर्णता से भोगना चाहता है, सुख ग्रहण करना चाहता है, उसके लिए भैरवी चक्र साधना सर्वोत्तम साधना है।

भैरवी चक्र साधना में साधक को एक दृढ़ संकल्प बनाना पड़ता है, कि मैं हर हालत में, हर स्थिति में आनन्द भैरवी सिद्धि प्राप्त कर के ही रहूंगा, इस साधना में दीन-हीन भाव, याचना उचित नहीं है।

भैरवी साधना की सिद्धि 'शिव और शक्ति' दोनों की ही सिद्धि है।

आनन्द भैरवी साधना विधान

भैरवी साधना शान्त मन से, हृदय में सुन्दर भावों को स्थिर कर प्रसन्न मन से, एकान्त स्थान में सम्पन्न करनी चाहिए, जहां साधना के समय किसी प्रकार का विघ्न न हो, साधक का मन बार-बार भटके नहीं।

भैरवी साधना में मूल रूप से चार पात्र विशेष रूप से आवश्यक है, साधक चार बड़े कटोरे ले सकता है, प्रत्येक पात्र की अलग-अलग पूजा है।

इसके अतिरिक्त **'आनन्द भैरवी यन्त्र'**, **'आनन्द भैरवी गुटिका'**, **'आनन्द भैरवी रस गन्ध'** तथा **'इच्छामति मुद्रिका'** आवश्यक है, इसके अतिरिक्त **'108 भैरव बीज'** आवश्यक हैं।

यह साधना मूल रूप से चार शुक्रवार को अथवा चार चतुर्थी को सम्पन्न की जाती है।

साधना दिवस के दिन साधक लाल वस्त्र धारण करें, ऊनी आसन को जल से धोकर शुद्ध करें, यह साधना रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् अर्थात् 10 बजे के बाद प्रारम्भ करें, इन चार पात्रों के अलावा एक जल से भरा पात्र, चावल, घिसा हुआ चन्दन अवश्य रखें, चारों पात्रों को क्रमश: चांवल की ढेरी पर स्थापित कर सर्वप्रथम अपने हाथ में संकल्प कर 'ॐ गुरुभ्यो नमः' से गुरु का ध्यान तथा 'गं गणपतये नमः' से गणेश का ध्यान कर इष्ट देवता को प्रणाम करें, साधना प्रारम्भ करने की आज्ञा प्राप्त करें, लोटे में रखे जल से सब पात्रों की शुद्धि करें और इन पात्रों में आवश्यक द्रव्य भरें।

प्रथम पात्र में शहद, दूसरे पात्र में दूध से बना मिष्ठान, तीसरे में मीठा शर्बत और चौथे पात्र में उस ऋतु में उपलब्ध फल का रस भरें।
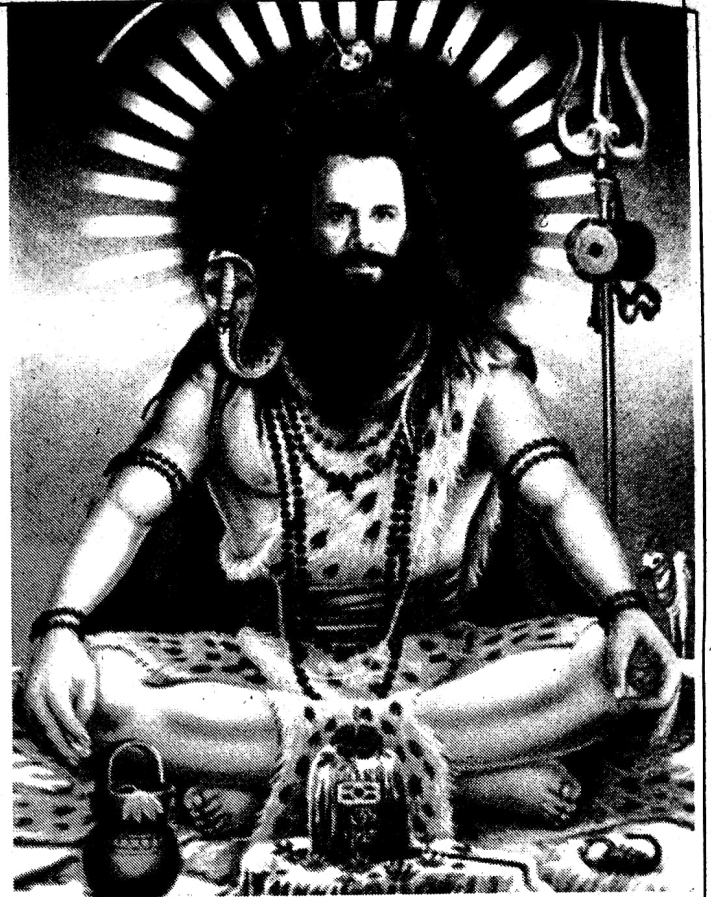
पूजन क्रम में सर्वप्रथम आनन्द भैरवी का ध्यान करें-

ध्यान मन्त्र

आनन्द भैरवीं देवी वराभयलसत्कराम्।
मोररूपां वरारोहां त्रिनेत्रां रक्तवाससम्।।
रक्तवर्णा महरौद्रौ सहस्रभैरवान्विताम्।
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यै स्तूयमानां शिवां भजे।।

ये चार पात्र आनन्द, रूप, रस और काम के स्वरूप हैं, सर्वप्रथम प्रथम पात्र का पूजन कर चन्दन चढ़ा कर इसके शहद में **'आनन्द भैरवी यन्त्र'** डाल दें, अब पुष्प चढ़ाएं तथा धूप और दीप अर्पित करें तथा अपने पास रखे हुए 108 भैरव बीजों को हाथ में ले कर निम्न मन्त्र का जप करते हुए एक-एक बीज पात्र के सामने अर्पित करें, आगे सभी पात्र पूजन में इन्हीं भैरव बीजों का प्रयोग और नियमों का पालन करें।

मन्त्र

।। ॐ सुधादेवी विद्महे सुधा देवी
धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।।

अब दूसरे पात्र जिसमें दूध का मिष्ठान रखा हुआ है, उसमें **'आनन्द भैरवी गुटिका'** डालें, फिर उसका पूजन कर

निम्न मन्त्र का 108 बार जप करें और 108 भैरव बीज चढ़ाएं।

मन्त्र

।। ॐ ह्रौं क्षों मांसं शोधय शोधय
ॐ ह्रौं क्षों स्वाहा।।

अब साधना का तीसरा क्रम रसपात्र साधना है, इसमें भी विधान ऊपर लिखे विधानों की तरह ही है, इस पात्र में 'आनन्द भैरवी रसगन्ध' डालें फिर भैरव बीजों को पात्र के सामने निम्न मन्त्र जप करते हुए अर्पित करें–

मन्त्र

।। ऐं ह्रीं ब्लूं ऐं सौं ब्लूं सः सः सः
इमें मीनं शोधय शोधय स्वाहा।।

अब कामपात्र का पूजन कर उसमें **'इच्छामति मुद्रिका'** डाल दें फिर भैरव बीजों को अर्पित करते हुए निम्न मन्त्र का जप करें–

मन्त्र

।। प्लुं न्लुं स्लुं ग्लुं म्लुं स्वाहा अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि महत्प्रकाशयुक्ते अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।।

जब यह क्रम पूरा हो जाय तो आनन्द भैरवी का ध्यान करते हुए, अपनी इच्छाओं को स्पष्ट रूप से प्रगट करते हुए, क्रमबद्ध रूप से पात्र में रखा हुआ द्रव्य स्वयं प्रसाद के रूप में ग्रहण कर लें, इसलिए प्रत्येक पात्र में उतना ही द्रव्य रखें, जितना ग्रहण करने की क्षमता हो।

अब साधक उसी स्थान पर नेत्र बन्द कर निश्छल हो कर आनन्द भाव से थोड़ी देर बैठा रहे, इस समय कुछ विशेष अस्पष्ट दृश्य दिखाई देते हैं, एक मार्ग दिखाई पड़ने लगता है, किसी साधक को वन-उपवन दिखाई देता है, किसी को कोई सौन्दर्य स्वरूप दिखाई देता है, इससे यह निश्चित हो जाता है, कि साधना सही दिशा की ओर अग्रसर है।

साधना का यह क्रम चार शुक्रवार तक करें, प्रत्येक शुक्रवार को सामग्री वही रखनी है, पात्र वही रखने हैं, भैरव बीज वही रखने हैं।

तीसरे शुक्रवार तक स्थिति ऐसी बनने लगती है, कि साधक यह अनुभव करता है, कि वह साधना में अकेला नहीं बैठा है, कोई उसके पीछे खड़ा है, कुछ ध्वनियाँ सुनाई देने लगती हैं, एक सुगन्धित, आनन्दमय वातावरण बनने लगता है।

चौथे शुक्रवार को साधना पूर्ण होते-होते साक्षात् आनन्द भैरवी अपने समस्त सौन्दर्य भाव के साथ प्रगट होती है, उस समय साधक अपनी प्रिया रूप में बनाने हेतु वचन बोले, भैरवी साधक का प्रस्ताव स्वीकार करती है, और उसे इच्छित वर देती है।

इसके बाद जब भी साधक अपने किसी कार्य से, अपनी इच्छा हेतु आनन्द भैरवी का ध्यान करता है, तो भैरवी साधक को उसकी इच्छापूर्ति में सहायक होती है। यह साधना वास्तव में तन्त्र साधना की ऐसी विशिष्ट साधना है, जो हर साधक अपने जीवन में पूर्ण रूप से सुखी भावमय बनाने के लिए सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकता है।

साधना सामग्री- 480/-

सूर्यदेव अस्ताचल में उतरे तो उन्हें यह अभिमान सताने लगा कि उनके बाद धरती वालों की बड़ी दुर्गति होगी। सघन अन्धकार में वे पास की वस्तुएँ तक न देख सकेंगे और जरा भी दूर तक न चल सकेंगे।

अन्धेरा आया तो जरूर पर वैसा संकट उत्पन्न न हुआ जैसा कि सूर्यदेव सोचते थे। अन्धकार की चुनौती स्वीकार करते हुए असंख्यों लघुकाय दीपकों ने जलना आरम्भ कर दिया और अन्धेरे के बीच भी दुनिया के आवश्यक काम बिना रुके चलते रहे।

खिड़की खोलकर सूर्यदेव ने धरती वालों की स्थिति को देखा तो तथ्य स्पष्ट था कि किसी के चले जाने पर भी भगवान की बनाई इस दुनिया में कहीं कुछ कार्य रुकता नहीं।